रासो काव्य की सामान्य विशेषता

डॉ. कृष्ण कुमार पासवान
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग
राम चरित्र सिंह महाविद्यालय
मंझौल, बेगुसराय
सम्पर्क : ksoni.hindi@gmail.com

किसी भी साहित्यिक कृति के दो पक्ष होती हैं; भावगत एवं शिल्पगत। इन्हीं दोनों पक्षों की विशेषता के आधार पर किसी भी कृति का मूल्यांकन भी किया जाता है। इन्हीं दोनों पहलुओं के आधार पर रासो काव्य की विशेषता का भी आकलन किया जा सकता है।

भावगत विशेषताएँ

1. ऐतिहासिकता और कल्पना का सम्मिश्रण :

अधिकतर रासो काव्यों की विषय-वस्तु ऐतिहासिक है किंतु उनमें कल्पना की अधिकता है। साहित्य केवल इतिहास की पुनरावृत्ति नहीं होता अत: उसमें कल्पना का समावेश स्वाभविक है किंतु रासो काव्यों में ऐतिहासिक तत्वों जैसे घटनाओं, तिथियों, वंशावली आदि में की गई छेड़-छाड़ ने उनकी प्रामाणिकता पर प्रश्न चिह्न लगा दिया है।

2. अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन **:**

रासो काव्य राजाओं के आश्रय में रहकर लिखे गए अत: उनमें आश्रयदाताओं की बढ़ा - चढ़ाकार प्रशंसा की गई। उनकी दानवीरताए युद्धवीरता आदि का अतिशयवर्णन किया गया है जिसके लिए वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

3. वीरता व श्रृंगार का चित्रण **:**

रासो काव्यों में मूलत: वीर प्रधान काव्य आते हैं। अपभ्रंश व हिन्दी की कुल आठ रासों रचनाओं में वीर रस को अंगी रस मानते हुए आचार्य शुक्ल ने आदिकाल का नाम

'वीरगाथा काल' रखा था। उस समय के सामंती परिवेश में वीरता व श्रृंगार की प्रवृत्तियां स्वाभाविक थी। शौर्य प्रदर्शन उस समय की जरूरत थी यथा -

'बारह बरस लौ कूकर जीवै, अरू तेरह लौ जीवे सियार।

बरस अठारह क्षत्रिय जीवे, आगे जीवन को धिक्कार।।'

श्रृंगार वर्णन में संयोग व वियोग दोनों पक्षों का चित्रण हुआ है और नख-शिख वर्णन आदि काव्य-रूढ़ियों का प्रयोग भी हुआ है।

4. युद्धों का जीवंत चित्रण **:**

उस समय के रचनाकार केवल कवि ही नहीं थे बल्कि योद्धा भी थे। उन्होंने युद्धों को स्वयं भोगा था। इसलिए उनके युद्ध चित्रण जीवंत हो उठे हैं। जिनमें युद्धों के विभिन्न क्षणों का सजीव वर्णन किया गया है।

5. जनचेतना की अनुपस्थिति **:**

रासो काव्य राजदरबारों या मठों में बैठकर लिखे गए अत: उनमें जन-सामान्य के भावों की अभिव्यक्ति नहीं मिल सकी।

(शिल्पगत विशेषताएं)

6. काव्य **-** रूप **:**

रासो काव्य प्राय: प्रबन्धात्मक है। 'पृथ्वीराज रासो' हिन्दी का पहला महाकाव्य है। 'बीसलदेव रासो' खण्डकाव्य का उदाहरण प्रस्तुत करता है। उपदेशात्मक रासो काव्य मुक्तक में रचे गए।

7. भाषिक विविधता **:**

इन काव्यों में भाषिक विविधता दिखाई देती है। वीर रस प्रधान काव्य 'डिंगल' में लिखे गए। श्रृंगार काव्यों की रचना में पिंगल भाषा की प्रधानता रही तो उपदेशात्मक रासो

काव्य में अपभ्रंश मिलते हैं। इसके अतिरिक्त अरबी, फारसी, प्राकृत, पंजाबी, ब्रज आदि का प्रयोग भी हुआ।

8. छंद :

रासो काव्यों में सैंकड़ों छन्दों का प्रयोग हुआ। अकेले 'पृथ्वीराज रासो' में 68 छन्दों का प्रयोग हुआ। दोहा, चौपाई, रोला आदि प्रमुख रहे।

9. कथानक रूढियां :

कथानक-रूढ़ियों जैसे शुक-शुकी संवाद, स्वप्न आदि का भी यथास्थान प्रयोग हुआ है।

10. अलंकार :

अलंकारों का प्रयोग भी हुआ है। शब्दालंकार व अर्थालंकार दोनों का प्रयोग प्रसंगानुसार हुआ है।

(समाप्त)